सारांश

शिक्षा के क्षेत्र में,शैक्षणिक मनोविज्ञान मुख्य रूप से इस विश्वास को ले जाने के लिए व्यवहारिक है कि इसे अनुभवजन्य और माप उन्मुख होना चाहिए। हालांकि पिछले दो दशकों में अन्य संज्ञानात्मक और मानवतावादी दृष्टिकोणों को भी शामिल किया गया है और कुछ हद तक मानसिक और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में मनोविश्लेषण भी बहुत अधिक है। एक शिक्षाविद ने कहाहै कि एक महान शिक्षक अपने शिक्षार्थियों की जरूरतों के प्रति बहुत संवेदनशील होता है। शिक्षक पूरी तैयारी के साथ प्रथम श्रेणी में आते हैं और वर्ष के पूरे पाठ्यक्रम या पाठ्यक्रम को समझाने का प्रयास करते हैं। सक्षम शिक्षक न केवल वह होता है,जो सामग्री का सही ज्ञान रखता है,बल्कि बहुत धैर्य भी रखता है। वर्तमान शोध "माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण क्षमता पर सामाजिक-आर्थिक स्थिति और व्यक्तित्व के प्रभाव" पर है। इस शोध में सामाजिक आर्थिक स्थिति (SES) "शिक्षकों के कार्य अनुभव के कुल माप का एक आर्थिक और समाजशास्त्रीय संयोजन है और लोगों के संबंध में उनके परिवार की आर्थिक और सामाजिक स्थिति। यह घरेलू आय,शैक्षिक योग्यता और व्यवसाय पर आधारित है। यहां सामाजिक-आर्थिक स्थिति व्यक्तियों की अपनी विशेषताओं का आकलन है। हालांकि,सामाजिक-आर्थिक स्थिति शब्द का उपयोग आमतौर पर समाज / कार्य स्थान में आर्थिक अंतर को चित्रित करने के लिए किया जाता है। व्यक्ति के स्थान को परिभाषित करने के लिए सामाजिक-आर्थिक स्थिति को तीन स्तरों (उच्च सामाजिक-आर्थिक स्थिति,मध्य सामाजिक-आर्थिक स्थिति

और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति) में विभाजित किया गया है। यहाँ तीन चर में व्यक्ति के आय,शिक्षा और व्यवसाय का मूल्यांकन किया। इस अध्ययन में व्यक्तित्व को व्यवहार,अनुभूति और भावनात्मक लक्षणों के विशिष्ट सेट के रूप में परिभाषित किया गया है जो एक शिक्षक में देखा जा सकता है। यहाँ क्लास रूम और स्कूल कैंपस के भीतर की प्रेरणा और मनोवैज्ञानिक अंतःक्रियाओं पर ध्यान दिया गया। शिक्षक का व्यक्तित्व बच्चों के दृष्टिकोण और योग्यता को प्रभावित करता है। एक शिक्षण योग्यता सामग्री ज्ञान,शिक्षण कौशल और इसके कार्यान्वयन से कुछ अधिक है।यह सबसे उपयुक्त मनोसामाजिक संसाधनों को जुटाकर जटिल जरूरतों को पूरा करने की क्षमता का परिचय देता है जिसमें एक विशेष संदर्भ में शिक्षण कौशल और शिक्षण दृष्टिकोण शामिल हैं। “एक शिक्षक को उत्कृष्टता की खोज के लिए योग्यता आवश्यक है। शिक्षकों के लिए स्पष्ट दृष्टिकोण के संकेत निम्नलिखित हैं: शिक्षक सीखने के लिए सीखने के क्षेत्र का चयन करता है,शिक्षक सफलता के लिए मानदंड निर्धारित करता है,और शिक्षक पाठ से पहले मानदंडों को शिक्षार्थियों को सूचित करता है।शिक्षक शिक्षार्थियों के ज्ञान / कौशल के सफल उपयोग को प्रदर्शित करता है। मॉडलिंग के माध्यम सेशिक्षक शिक्षार्थियों के अधिग्रहण का मूल्यांकन करता है।यदि आवश्यक हो तो शिक्षक ज्ञान / कौशल प्राप्त करने के लिए उपचारात्मक अवसर प्रदान करता है। (आर्चर और ह्यूजेस2011,नाइट,2012)। इस शोध अध्ययन में माध्यमिक शिक्षा के शिक्षकों का मतलब है कि माध्यमिक विद्यालय में काम करने वाले व्यक्ति जहाँ वे शिक्षार्थियों

को इतिहास,अंग्रेजी,विज्ञान या गणित जैसे किसी विशेष आवंटित विषय पढ़ाते हैं। निष्कर्ष यह है कि सामाजिक आर्थिक स्थिति और शिक्षण योग्यता के अलावा शैक्षणिक उपलब्धि के लिए जिम्मेदार विभिन्न अन्य कारक हैं। आईसीटी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और यह शिक्षकों को सक्षम भी बनाता है। सूचना संचार प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला में विभिन्न उपकरणों का उपयोग किया जाता है जिनका उपयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान किया जा सकता है। शिक्षक अधिकांश उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं। इस क्षेत्र में कंप्यूटर का उपयोग बहुत आम है। भारतीय कक्षा में हर कक्षा में कंप्यूटर उपकरण नहीं होते हैं। स्कूलों में एक अलग लैब है जहां पर्याप्त संख्या में कंप्यूटर लगाए गए है। स्कूली छात्र अपने साथ लैपटॉप नहीं रखते हैं। इसलिए शिक्षक आईसीटी अवधि के दौरान ही कंप्यूटर के माध्यम से पढ़ाते हैं। एक अन्य उपकरण मोबाइल फोन है जो आमतौर पर शिक्षार्थियों द्वारा उपयोग किया जाता है। लेकिन शिक्षार्थियों को अपने मोबाइल फोन को कक्षा में लाने की अनुमति नहीं है। मोबाइल फोन में विभिन्न विशेषताएं होती हैं ।उदाहरण के लिएटाइमर,कैलकुलेटर,घटनाओं की तस्वीरों को क्लिक करना और उन्हें संपादित करना,व्याख्यान की रिकॉर्डिंग,शॉर्ट सर्विस मैसेज (एसएमएस) के माध्यम से जानकारी,प्रशासनिक ढाँचे के लिए उपयोग, सीखने की सामग्री,ई मेल जैसे उपयोग करने के लिए बहुत आसान हैं। ipadवह डिवाइस है जिसका उपयोग रिकॉर्डिंग,म्यूजिक,डाउनलोड और ट्रांसफर फाइल्स,डिक्शनरी आदि के लिए किया जा सकता है। डिजिटल कैमरा,टैबलेट डिवाइस,प्रोजेक्टर,टेलीविजन,रेडियो,और टेप

रिकार्डर का उपयोग शिक्षण के दौरान कक्षाओं में किया जा सकता है। फिर हमारे पास इंटरएक्टिव व्हाइटबोर्ड है। इंटरएक्टिव व्हाइटबोर्ड के माध्यम से शिक्षण बहुत आसान और सुखद हो जाता है। इंटरएक्टिव व्हाइटबोर्ड में बहुत सारी विशेषताएं हैं। इंटरएक्टिव व्हाइटबोर्ड का उपयोग करके शिक्षक की शिक्षणक्षमता बढ़ती है। शिक्षक इंटरएक्टिव व्हाइटबोर्ड के हार्डवेयर में अपने विषय का बहुत डेटा रखसकते हैं। इसेसे जोड़ा जा सकता है। यह सब दिखाता है कि शिक्षण योग्यता सामाजिक-आर्थिक स्थिति और शिक्षकों के व्यक्तित्व पर निर्भर नहीं हैबल्कि शिक्षा के क्षेत्र में हाल के विकास के शिक्षकों द्वारा जागरूकता और रुचि को भी दर्शाती है।

Abstract

In the field of education, academic psychology has been predominantly behavioristic carrying the belief that it has to be empirical and measurement oriented. However in the last two decades other cognitive and humanistic perspectives have been incorporated as well and to some extent also psychoanalysis of course much more in the domain of consoling and mental health. One educationist said, that a great teacher is very sensitive to their learners needs. Teacher moves into the first class with full preparation and try to explain the entire syllabus or curriculum of the year. Competent teacher is not only he who keeps a sound knowledge of the content but also keeps lot of patience. The present research is on “Impact of Socio-Economic Status and Personality on Teaching Competency of Secondary School Teachers”. The explanation of the used terms are essential to discuss. Socioeconomic status (SES) in this research is “an economic and sociological combination of total measure of a teachers work experience and their family's economic and social position in relation to the people belongs to that society. It is based on household income, educational qualification, and occupation. Here the socio-economic status is individuals own attributes are assessed. However, the term socio-economic status is very commonly used to depict an economic difference in society/ work place as a whole. Socioeconomic status is divided into three levels (high socio-economic status, middle socio-economic status, and low socio-economic status) to define the place of an individual. Here the three variables assessed individual’ sin come, education, and occupation”. Personality in this study is defined as the characteristic set of behaviors, cognitions, and emotional traits that can be seen in a teacher. Here the

motivation and psychological interactions within the class room and school campus taken into consideration. The teacher's personality effects the attitude and aptitude of the children. A teaching competency is something more than content knowledge, teaching skills and its implementation; it acquaint the ability to complete complex needs by mobilizing the most appropriate psychosocial resources which includes teaching skills and teaching attitudes in a particular context. "Competency is essential to an educator's pursuit of excellence. The following are hallmarks of an explicit approach for teachers: Teacher selects the learning area to be taught, Teacher sets criteria for success, and teacher informs Learners of criteria ahead of the lesson, Teacher demonstrates to the learners' successful use of the knowledge/skills through modeling, Teacher evaluates learners acquisition, Teacher provides remedial opportunities for acquiring the knowledge/skills, if necessary and Teacher provides closure at the end of the lesson". (Archer & Hughes, 2011; Knight, 2012). In this research study the Secondary education teachers means in this research is the one who work in high schools/ Secondary school, where they teach Learners a particular allotted subject, like history, English, science or mathematics. Teachers have a qualification of B.Ed. Findings are that there are various other factors responsible for the academic achievement other than the socioeconomic status and teaching competency. ICT plays an important role and also it makes teachers competent. There are various devices used in Information Communication Technology Laboratory (ICT) which can be used during teaching learning process. Teachers are using most of the devices. The use of computer is very common in this area. In Indian classroom every class does not have furnished computer devices. Schools have a separate lab where adequate number of computers were installed. School students do not keep laptop with them. Therefore teachers

teaches via computer only during the ICT period. One another device is Mobile phones which is very commonly used by the learners. But learners are not allowed to bring their mobile phones into the classroom. Mobile phones have various features which are very easy to use like timer, calculator, clicking of photos of the events and also editing them, recording of lectures, information via short service messages (SMS), use for administrative purposed, learning material, E Mail checking, reminder for homework, surfing from internet explorer, *use dictionary* and many more. *IPADS is the device which can be used for recording, play music, download and transfer files, use dictionary etc. Digital Cameras, Tablet devices, projectors, television, radio, and tape recorders can be used in the classrooms during teaching. Then we have* Interactive Whiteboard. Through Interactive Whiteboard teaching becomes very easy and enjoyable. A lot of features are there in the Interactive Whiteboard (IWB). Teacher's competency increases using Interactive Whiteboard. Teachers can even stole lot of data of their subject in the hardware of Interactive Whiteboard. It can be connected with wifi. This all shows that teaching competency is not depend on socioeconomic status and personality of the teachers but also the awareness and interest taken by the teachers of recent development in the field of Education.